भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2023-24)

कक्षा-X	**विभाग: हिंदी**	**Date – 16.08.23**
Question Bank	**कर चले हम फ़िदा (कैफ़ी आज़मी)**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: ___________________अनुभाग: _____अनुक्रमांक: _____दिनांक: __________

1. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

उत्तर: यह गीत सन् १९६२ के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखा गया था। जब चीन ने अरुणाचल प्रदेश (नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी, नेफ़ा) में भारतीय सीमा पर आक्रमण कर दिया था, तब अनेक भारतीय सैनिकों ने लड़ते-लड़ते अपना बलिदान दिया था। इसी युद्ध को आधार बनाकर चेतन आनंद ने 'हकीकत' फ़िल्म बनाई थी। इस फ़िल्म में भारत-चीन युद्ध के यथार्थ को मार्मिकता के साथ दर्शाते हुए उसका परिचय जन सामान्य से करवाया गया था। इसी फ़िल्म के लिए प्रसिद्ध शायर कैफ़ी आज़मी ने 'कर चले हम फ़िदा 'नामक देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत यह मार्मिक गीत लिखा था।

2. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

उत्तरः हिमालय को भारत का ताज माना जाता है। हिमालय के झुकने का मतलब है भारत का सिर झुकना यानी भारत की इज़्ज़त कम होना। हिमालय हमारे देश की आन, बान और शान का प्रतीक है।

3. इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?

उत्तर: भारत देश में पारंपरिक तरीके से दुल्हन को लाल चुनरी पहनाई जाती है। कविता में कवि ने धरती को दुल्हन की संज्ञा दी है क्योंकि जिस प्रकार दुल्हन अपने सिर को लाल जोड़े से ढकती है, वैसे ही हिमालय भारत के सिर के समान है और देश की रक्षा करते हुए, शहीद हुए सैनिकों के ख़ून से हिमालय की धरती का रंग सुर्ख लाल हो गया था, जो किसी नवविवाहिता (दुल्हन) के जोड़े का होता है। सैनिकों ने इस धरती को अपना रक्त देकर दुल्हन की तरह श्रृंगार किया है। कवि को लगता है कि शहीदों के ख़ून से हिमालय की धरती का रंग लाल हो गया है, जो इस बात का सूचक है कि मातृभूमि एक दुल्हन की तरह सज गई है।

4. 'कर चले हम फ़िदा' कविता पाठक के मन को छू जाती है। इसके क्या कारण हो सकते हैं? उत्तर: 'कर चले हम फ़िदा' गीत शैली में लिखी गई कविता है । इसमें भाषा और संगीत का अद्भुत तालमेल है । यह गीत कर्णप्रिय होने के साथ-साथ ज़ुबान पर भी शीघ्रता से चढ़ जाता है । इस गीत की स्वरलहरियाँ भी मन-मस्तिष्क को सकारात्मकता से ओत-प्रोत कर देती हैं। प्रस्तुत गीत का शिल्प-सौंदर्य ही श्रेष्ठ नहीं है, वरन् विषय एवं मूल भाव भी जीवन के मर्मस्पर्शी पहलुओं से जुड़े हैं। इस गीत में देश के लिए न्योछावर होने वाले अर्थात् देश के मान-सम्मान व रक्षा की ख़ातिर अपने सुखों को त्याग कर मर-मिटने वाले सैनिकों ने अपने साथी सैनिकों व समस्त देशवासियों से यह अपेक्षा की है कि वे उनकी मृत्यु के पश्चात् देश के मान-सम्मान को बनाए रखेंगे। उनकी कुर्बानियों को व्यर्थ नहीं जाने देंगे। 1962 के भारत चीन युद्ध की

पृष्ठभूमि पर लिखा यह गीत युद्ध का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। 'मरते मरते रहा बाँकपन साथियो,' 'जान देने की रुत रोज़ आती नहीं,' 'ज़िंदगी मौत मिल रही है गले' आदि गीत की ऐसी पंक्तियाँ हैं, जिन्हें पढ़ने मात्र से हृदय देश-प्रेम की भावना से सराबोर हो जाता है। ये पंक्तियाँ पाठक के मन-मस्तिष्क पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ जाती हैं।

5. कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है और क्यों?

उत्तर: कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग समस्त देशवासियों के लिए किया है; खासकर युवाओं के लिए। देश के लिए बलिदान देने वाले ये सैनिक देशवासियों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे उनके बलिदान का मूल्य समझते हुए निरंतर देशहित में लगे रहें ताकि उनका बलिदान व्यर्थ न जाए।

6. कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उत्तर: एक सैनिक यदि शहीद होता है तो उसके स्थान पर दूसरा सैनिक लड़ाई जारी रखने के लिए आ जाता है। इस तरह से कोई भी लड़ाई अपने सही मुकाम पर पहुँच पाती है। इस कविता में काफ़िला आगे बढ़ाने का मतलब है - युद्ध में अपने प्राण न्योछावर करने वाले सैनिकों की कभी न खत्म होने वाली पंगत तैयार करना। काफ़िले शब्द का प्रयोग उन देशप्रेमियों के लिए किया गया है, जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान हँसते-हँसते दे देते हैं। कवि की अपेक्षा यह है कि ऐसे वीर सपूतों का जन्म बार-बार होगा और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों का उत्सर्ग कर देने वाले सैनिकों का काफ़िला यूँही सजता रहेगा। इसी आशा से कवि ने इस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने को कहा है।

7. इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर : 'सर पर कफ़न बाँधने' का मतलब है - हर समय शहीद होने के लिए तैयार रहना। जो आदमी मौत से डरता है, वह कभी भी एक सच्चा सैनिक नहीं बन सकता है। यह गीत शहादत के क़रीब खड़े सैनिकों के दिल की आवाज़ है, जिसमें वे अपने सैनिक साथियों तथा देशवासियों से आह्वान कर रहे हैं कि वे उनके बाद देश की रक्षा समर्पित होकर करें। इस पंक्ति के माध्यम से सैनिक यह भी कहना चाहते हैं कि वे तो अपने प्राणों से प्रिय देश पर अपने प्राण न्योछावर करके जा रहे हैं, किंतु दुश्मन को अपने नापाक इरादों में कामयाब होने से रोकने के लिए उनके सैनिक साथी ही नहीं, बल्कि समस्त देशवासी बलिदान के लिए तत्पर रहें क्योंकि अपनी मातृभूमि पर बलिदान होने की यह पवित्र भावना ही देश के दुश्मनों से देश की हिफ़ाज़त कर सकती है।

8. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: युद्ध बहुत ही विनाशक होता है, इसलिए किसी भी देश को हमेशा युद्ध को टालने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जब युद्ध ज़रूरी होता है तो उसके लिए हमेशा तैयार रहना भी अत्यंत ज़रूरी है। इससे दुश्मनों में भी डर बना रहता है और वे कुछ भी उल्टा-सीधा करने से पहले सौ बार सोचने को मजबूर हो जाते हैं। दुनिया का लगभग हर बड़ा देश अपनी सीमा की सुरक्षा के लिए अरबों रुपये खर्च करता है ताकि उसकी सेना हमेशा किसी अनहोनी के लिए तैयार रहे। उत्तम हथियारों से लैस सेना तब तक कारगर नहीं होती, जब तक कि उसके सैनिकों में अदम्य साहस और जोश न हो। यह कविता उसी जोश को जगाए रखने

का काम आसानी से कर सकती है। यह 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। कवि ने इसके माध्यम से उन सैनिकों के हृदय की आवाज़ को शब्द दिए हैं, जिन्होंने देश-रक्षा के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। उन सैनिकों ने देश का गौरव कम नहीं होने दिया। हिमालय का मस्तक, उसकी आन- बान-शान कम नहीं होने दी। लड़ते-लड़ते साँसें थमने पर, अत्यधिक ठंड से नब्ज़ तक जमने पर, जिन्होंने अपने बाँकपन (जवानी के जोश) को कम न होने दिया, वे सैनिक अपने साथी सैनिकों और देशवासियों से भी ऐसे ही समर्पण की आशा रखते हैं। देशवासियों को भी अपने सुखों और निजी स्वार्थों को छोड़कर देश की रक्षा के लिए सिर पर कफ़न बाँधकर तैयार हो जाना चाहिए। भारत माता सीता के समान पवित्र है। कोई भी रावण अर्थात् शत्रु उसके दामन को छू न सके। इसकी पवित्रता को खंडित न कर सके। देशवासियों को राम-लक्ष्मण के समान वीरता दिखानी होगी। भारतवर्ष की रक्षा करनी होगी।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए:

1. साँस थमती गई नब्ज़ जमती गई, फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर: ये पंक्तियाँ यह दिखाती हैं कि किस तरह से एक वीर सैनिक अपने आख़िरी दम तक हार नहीं मानता। चाहे साँस उखड़ जाए या फिर नब्ज़ रुक जाए, लेकिन एक सच्चा सैनिक मरते दम तक अपने कदम आगे ही बढ़ाता है ।

2. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर, इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उत्तर: इन पंक्तियों में दुश्मन की तुलना रावण से की गई है। लक्ष्मण ने सीता के चारों ओर लक्ष्मण रेखा खींच दी थी ताकि वे सुरक्षित रहें। कवि का कहना है कि इसी तरह से यदि सैनिक अपने ख़ून से लक्ष्मण रेखा खींच दे अर्थात् बलिदान देकर शत्रु को रोके तो कोई भी दुश्मन हमारी सीमा को लाँघने की हिम्मत नहीं करेगा।

3. छू न पाए सीता का दामन कोई, राम भी तुम तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

उत्तर: यहाँ पर मातृभूमि की तुलना सीता से की गई है। वन में सीता की रक्षा में राम और लक्ष्मण दोनों ही तत्पर रहते थे। दोनों की अलग-अलग भूमिका थी, जिसे वे आपसी तालमेल से निभाते थे। यहाँ पर कवि ने कहा है कि हर एक युवा को राम और लक्ष्मण-दोनों बनकर सीता जैसी मातृभूमि की रक्षा करनी होगी। 'सीता का दामन' देश का सम्मान है। देशवासियों को राम-लक्ष्मण कहा गया है क्योंकि सबको देश की रक्षा करनी है। उन्हें भारतीयता को भी बनाए रखना है और सीमाओं को भी।

===